क्या हो सकता है आज़ादी के अमृत महोत्सव में हमारा योगदान?

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

समाज कल्याण का एक बहुत उम्दा किस्म का एक बहुउद्देश्य कार्यक्रम पूरे भारत वर्ष में एक जोश और जुनून के साथ आगे बढ़ रहा है। पूरे भारत वर्ष के 75 वर्ष के इतिहास को सभी अलग-अलग तरीके से सबके सामने रख रहे हैं। गरिमामयी संस्कृति को सबके सामने रख रहे हैं। भारत कितना उज्ज्वल था और कितना उज्ज्वल बनने वाला है, इन सब बातों को लेकर कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। लेकिन हम सोच रहे थे कि हम इसमें अपना क्या योगदान दें सकते हैं!

तो हम सभी जब भी उन्नति की बात होती है या किसी देश की एक अर्थ व्यवस्था को लेकर उसको पटरी पर लाने की बात होती है तो ज़्यादातर चहु तरफा विकास देखा जाता है, जिसमें समाजिक-आर्थिक पहलू, वैज्ञानिक पहलू, रक्षा आदि के भी पहलू शामिल होते हैं। लेकिन एक आध्यात्मिक पहलू है जो हमेशा अधूरा और अछूता रहता है। क्योंकि व्यक्ति सारा कुछ अगर विकास कर भी ले, लेकिन अगर एक विकास न हो जिसको हम आध्यात्मिक विकास कहते हैं तब तक व्यक्ति हमेशा अधूरा रहेगा और भारत वर्ष की संस्कृति का सबसे पहला अक्षर भी और पहला साक्षर भी इसी बात से जुड़ा हुआ है कि अगर भारत आध्यात्मिक है तभी आर्यावर्त है। क्योंकि आर्यावर्त आध्यात्मिकता के साथ सबसे बड़ा ज़्यादा ताल्लुक रखता है। इसीलिए आध्यात्मिकता एक ऐसा पहलू है जिस पहलू के साथ अगर हम कभी आगे बढ़ते हैं तो हम निश्चित रूप से इन 75 वर्षों के इतिहास को और अच्छी तरह

से सबके सामने रख सकते हैं। क्योंकि जब तक मन हमारा आध्यात्मिक नहीं होगा, आत्म उन्नति को प्राप्त नहीं करेगा। अपने अन्दर की जागृति को आगे नहीं बढ़ा लेगा तब तक किसी और को और पहलुओं के बारे में ठीक से बता भी नहीं सकता। आज हम जब किसी को कुछ बता भी रहे होंगे तो उस समय जैसे कोई रटा-रटाया इतिहास होता है, एक संस्कृति होती है, एक सभ्यता होती है उसको सबके सामने रखते हैं। लेकिन जब व्यक्ति आध्यात्मिक होके उस बात को कहता है तो वो उससे बिल्कुल अलग भी है और उसके साथ जुड़ा हुआ भी है ऐसा सामने वाले को लगने लग जाता है। तो आध्यात्मिकता को पुरज़ोर तरीके से सबके सामने रखा जाये। उसके पहले हम सभी का एक योगदान ये होना चाहिए कि हमको सबसे पहले खुद पर नियंत्रण रखके पूरी दुनिया को ये दिखाना है कि संयम और नियम से ही भारत हमेशा आगे बढ़ा है क्योंकि जब तक नियम और संयम हमारे जीवन में नहीं आयेगा, तब तक उन्नति तो होगी लेकिन वो उन्नति अधूरी-सी होगी।

एक उदाहरण हम आपको ज़रूर देना चाहेंगे जैसे कोई टेक्नोलॉजी इस समाज में आती है, इस देश में कोई भी टेक्नोलॉजी आती है, तो उस तकनीकी को जब हम इस्तेमाल कर रहे होते हैं तो उसको बनाने वाला किस भाव से उस चीज़ को बनाता है, उस पर उस चीज़ का मूल्य आधारित होता है। मूल्य निर्धारित होता है। अगर उसको सिर्फ बेचने के भाव से बनाया गया है तो वो चीज़ ज़्यादा दिन तक मार्केट(बाज़ार) में नहीं रहती। लेकिन सिर्फ समाज कल्याण और कल्याणार्थ बनाया गया हो तो उस चीज़ का मूल्य बढ़ जाता है। तो भारत ने आध्यात्मिकता को लेकर जब काम किया तो सिर्फ कल्याण के लिए काम किया और कल्याण सिखाने वाला परमात्मा है जो सिर्फ आके हमको कहता है कि आप कल्याणकारी पिता की संतान है, इसलिए कल्याणार्थ कोई भी कर्म करो पैसा तो ऑटोमेटिक आपके पास आ ही जायेगा।

तो दुनिया में सबने उन्नति की लेकिन सबने उसमें अपना स्वार्थ भी देखा। भारत परमार्थी था, है और रहेगा। इस भारत वर्ष की गरिमामयी संस्कृति को उज्ज्वल भविष्य देने के लिए हम सभी एक साथ, एक आवाज़ में अगर सिर्फ कल्याणार्थ कर्म करके दिखायें, स्व कल्याण, विश्व कल्याण और कल्याणकारी भाव से कर्म करके दिखायें तो उसमें निश्चित रूप से आध्यात्मिकता का एक पुट नज़र आएगा और जब लोग उसको यूज़(उपयोग) करेंगे, प्रयोग करेंगे तो सत्य रूप से पता चल रहा है कि भारत ने अपने ऊपर काम किया है। तो ये सारे जो पहलू हैं। जिनके बारे में हम बात कर रहे हैं। इन सारे पहलुओं को अगर एक साथ पिरोकर हम सभी कार्य करें तो इस 75 वर्ष के इतिहास को और अच्छा बनाया जा सकता है।

तो हम इसमें इस पहलू को अवश्य जोड़कर काम करें। आध्यात्मिक पहलू, कल्याणकारी पहलू, परमार्थी पहलू, हमेशा सबको आगे बढ़ाने का पहलू, हमेशा सबके लिए अच्छा सोचने का पहलू, सबको आगे रखकर कार्य करने का पहलू। ये पहलू हमेशा से उन ऊँचाईयों और उन बुलंदियों पर हमको ले जायेगा जो हमने कभी सोचा भी नहीं होगा।

प्रश्न : मेरा नाम सिलकी है। मैं जबलपुर से हूँ। मैंने दो साल पहले अपनी स्टडी कम्पलीट की थी। और अभी तक मुझे जॉब नहीं मिली है। इसके लिए मैं क्या करूँ?

उत्तर : हर फील्ड में एक प्रयास की बहुत आवश्यकता होती ही है। और नौकरी ऐसी चीज़ है जो हर व्यक्ति अपनी मनपसंद चाहता है। शुरु में थोड़ी हल्की भी मिले, सेलरी भी कम मिले तो भी ज्वाइन कर लेना चाहिए। मनुष्य को ये छोड़ देना चाहिए कि उसे वैसी ही जॉब मिले जैसी उसकी क्वालिफिकेशन है, जैसी उसकी एक्सपेक्टेशन्स हैं।

आप रोज़ राजयोग मेडिटेशन अवश्य करते होंगे लेकिन 21 दिन तक एक घंटा रोज़ एकाग्रता के साथ, टाइम फिक्स करके करें। और योगाभ्यास करने से पहले दो संकल्प करेंगे। कम से कम पाँच-पाँच बार, इस स्वमान को मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, जब हम इसको बार-बार करेंगे तो इससे क्या होगा हमारी शक्तियां एक्टिवेट हो जायेंगी, जग जायेंगी। फिर संकल्प किया कि सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, तो वो सफलता दिलाने में लग जायेंगी। जब हम एक घंटा योग करेंगे तो उससे हमारे इन संकल्पों में बहुत पॉवर होगी और हमारे से उसी तरह के वायब्रेशन्स चारों ओर फैलने लगेंगे। और वो पहुंचेंगे वहाँ, जहाँ से सफलता मिलनी है। उसको प्रभावित करके सफलता दिलायेंगे। इसके साथ-साथ सवेरे उठते ही जब आँख खुले तो सात बार यही संकल्प फिर करेंगे। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। एक विज़न बनायेंगे, आपको क्या देखना है कि अपॉइंटमेंट लेटर मेरे हाथ में है। ये सब अपनाते हुए, दृढ़ता से कार्य करते हुए आप चलेंगे तो आप निश्चित रूप से आपको एक अच्छी जॉब मिल जायेगी।

प्रश्न : मेरा नाम रागिनी है। मेरे ससुराल वाले मुझसे नौकरानी की तरह काम लेते हैं, व्यवहार करते हैं। मेरे पति भी मुझसे ऐसे ही पेश आते हैं। मैं पढ़ी-लिखी हूँ तो सोच रही हूँ कि क्यों न मैं डिवॉस लेकर अपनी अलग से पहचान बनाऊं। क्या करना चाहिए?

उत्तर : कोई भी व्यक्ति अपने आत्म सम्मान को ठेस लगता हुआ देखकर और रोज़-रोज़ देखे, तो सहन नहीं होता है। सबसे बड़ा मनुष्य का आत्म सम्मान ही होता है। मैं आपको एक बात कहूँगा कि डिवॉस लेकर अलग अपनी पहचान बना लेना वो संकल्प तो ठीक है। लेकिन अकेले जीवन जीना, समाज की बहुत सारी बातें सुनना और फिर उस अकेले जीवन में मनुष्य को बहुत कुछ फेस करना पड़ता है।

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

इसीलिए मैं आपको यही कहूँगा कि आप स्प्रिचुअल नॉलेज लें अगर आपने नहीं ली है तो। उसमें स्वचिंतन, स्व परिवर्तन और अपने स्वमान को स्वयं बढ़ाना इन सबसे भी हम दूसरों के व्यवहार को परिवर्तन करने की प्रेरणा दे सकते हैं। ये बहुत अच्छा सिद्धांत भगवान ने सिखाया है कि अगर तुम अपने स्वमान में रहेंगे तो सम्मान आगे-पीछे आपके परछाई की तरह रहेगा। आप स्प्रिचुअल नॉलेज लें और स्वमान का अभ्यास करें। और डिवॉस की बात अभी छोड़ें। पहले अपने स्वमान को बढ़ाएं। उनको गुड वायब्रेशन दें रोज़ सवेरे, मैं उसकी विधि बता देता हूँ, ये काम छह मास तक करें। सवेरे उठते ही आपको ये सोचना है कि मैं भगवान की संतान एक महान आत्मा हूँ और उन सबको भी देखेंगी कि वो भी भगवान की संतान हैं। भाग्यवान आत्मायें हैं। और उनके प्रति जो भी घृणा हो गई है तो उसको चेंज करेंगे। वो बहुत अच्छी आत्मायें हैं। वे मेरे बहुत अच्छे फ्रेंड्स हैं। उनका व्यवहार मुझसे बहुत सॉफ्ट है, बहुत स्वीट है। तब उनका व्यवहार बदलेगा और वो आपको बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।

प्रश्न : शादी के कुछ ही दिनों बाद पता चला कि मेरे पति का एक लड़की के साथ अफेयर था। और वे उसी से शादी करना चाहते थे लेकिन परिवार वालों के दबाव के कारण उन्होंने मुझसे शादी कर ली। पर वे इस शादी से खुश नहीं है और ना मुझे खुशी दे पा रहे हैं। उनका अभी भी उस लड़की से सम्बन्ध है। क्या ऐसे में मुझे अलग हो जाना चाहिए? मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर : ये हमारे चारों ओर का वातावरण, स्कूल कॉलेजों का माहौल इस तरह का हो गया है कि गर्लफ्रेंड और बॉयफ्रेंड की एक रसम-सी पड़ गई है भारत में। और नॉ डाउट, किसी पत्नी के लिए ये बहुत बुरी चीज़ होती है। मैं आपको कहूँगा कि हो सके तो आप ये बात अपनी सास से कहें। उनको कंविंस(मनवाना) करें कि देखो ये तो अब पूरा हो चुका है, अब हमारी शादी हो चुकी है। आपको अकेले ये निर्णय नहीं लेना चाहिए। आप अपने परिवार वालों की सहमति से निर्णय लें। अभी अलग होने की बात को छोड़ दें। पहले उन्हें सुधारने का भरसक प्रयास करें। लेकिन इससे पहले आपको कुछ स्प्रिचुअल प्रैक्टिस करनी चाहिए ताकि आपके बोल में शक्ति आ जाये। आपको राजयोग का अभ्यास करना होगा और स्वमान का अभ्यास करना होगा। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मेरा पति भी एक आत्मा है और वो बहुत समझदार है। वो मेरी भावनाओं को समझ कर उनको छोड़ देगा, ऐसी गुड फीलिंग आपको अवश्य रखनी है। तो आपका ये मार्ग सरल हो जायेगा। 21 दिन से लेकर 3 मास तक आप ये करें। और सवेरे उठते ही ये संकल्प अवश्य रखना होगा कि मेरा पति अवश्य बदल जायेगा। इस तरह से आपको आगे बढ़ना चाहिए।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com